Vol 5 Issue 7 Jan 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | Jan - 2016

"अफीम उत्पादकों का आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यांकन" (मन्दसौर जिले के विशेष संदर्भ में)

[1]सखाराम मुजाल्दे [2]गौरव पाटीदार
[1]वरिष्ठ व्याख्याता अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, देअविवि, इंदौर (म.प्र.)
[2]एम.फिल. (अर्थशास्त्र) अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, देअविवि, इंदौर (म.प्र.)

साराँश :–

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की ६० प्रतिषत जनसंख्या लगभग कृषि करती है। भारत में उन सभी फसलों का उत्पादन किया जाता है, जो भारत के विकास के लिए आवश्यक है चाहे वो खाद्यान्न, व्यवसायिक या औषधीय फसले हो। औषधीय फसल में भारत में अफीम की फसल का भी उत्पादन किया जाता है, जो पूर्ण रूप से एक लाइसेंस पद्धति व्यवस्था है। भारत में अफीम मुख्य रूप से मध्यप्रदेश और राजस्थान में उगाया जाता है। राजस्थान में चित्तौडगढ़, प्रतापगढ़, कोटा जिलों में तथा मध्यप्रदेश में रतलाम, मंदसौर, नीमच जिलों में अफीम का उत्पादन किया जाता है।

***प्रस्तावना* :–**

ध्यप्रदेश में अफीम की फसल करीब ३००० हैक्टेयर भूमि पर उगायी जाती है, जिसमें से ६० प्रतिशत के करीब अफीम उत्पादन मंदसौर जिले में उगाई जाती है। चूंकि हमने मंदसौर जिले का चयन इसलिए किया है क्योंकि भारत में सबसे अधिक अफीम का उत्पादन यहीं किया जाता है। अफीम एक पूर्ण रूप से औषधीय पौधा है, जिसका वैज्ञानिक नाम ;स्बीतलउं च्ंवंअमतपेद्ध है। अफीम, अफीम के फल से निकाले गये दूध ;स्ंजमगद्ध को सुखा कर बनाया गया पदार्थ है, जिसके सेवन से मादकता (नशा) आता है, इसका सेवन करने वालों को अन्य लोगों की अपेक्षा तेज नींद आती है। अफीम में १२ प्रतिशत तक मार्फिन ;डंतचीपदमद्ध पायी जाती है, जिसको प्रसंस्कृत (प्रासेस) करके हैरोइन ;भ्मतवपदद्ध नामक मादक द्रव्य तैयार किया जाता है। अफीम का दुध निकालने के लिये उसके कच्चे अपक्व फल मे से दूध निकलने लगता है, जो निकलने के बाद सूख जाता है या गाढ़ा पड जाता है। यह लसीला ै;जपालद्ध होता है।

2. संबंधित साहित्य का अध्ययन –

मनोज श्रीवास्तव (Jan २०१५) ने अपने अध्ययन 'कृषि के व्यवसायिकरण में कांट्रेक्ट फार्मिंग' में जहाँ किसान कांट्रेक्ट फार्मिंग से जुड रहे वही अब ई-खेती का भी चलन बढ़ रहा है। जिससे किसानों के उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ उनकी लागत में भी कमी आ रही है। ***दिव्या श्रीवास्तव* (*2014*)** के अपने अध्ययन 'बहुफसली खेती ने बदली किसान की तकदीर' में बताया कि कृषि वैज्ञानिकों कि बताई जाने वाली तकनीक के जरिए बहुफसली चक्र अपनाया जा सकता है इससे न केवल खेती में मुनाफा होगा

बल्कि आप दूसरे किसानों के चहेते भी बन सकते हैं।

डॉ. जितेन्द्र कुमार पाण्डेय(2015)

ने अपने अध्ययन 'कृषि का व्यवसायिकरण जरूरी' में बताया कि जब तक कृषि को जीविकोत्पार्जन का साधन समझा जाएगा तब तक कृषि लाभप्रद नहीं होगी इसलिए आज आवश्य है कृषि को तकनीकि एवं संसाधन सुदृढ़ कर इसे व्यवसायिक मॉडल के तौर पर विकसित किया जाए। ***श्रीनिवासन (2014)*** ने अपने अध्ययन ''भारत में औषधि मूल्य नियंत्रण प्रणाली'' में बताया कि एनपीपीए एवं स्वतंत्र औषधि मूल्य नियामक है जो सभी को आवष्यक एवं जीवनरक्षक औषधियां किफायती दामों पर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ***डॉ. रूपम मिश्रा*** ने अपने अध्ययन 'मिट्टी की जांच से बनाए मृदा को उपजाउ'' में बताया कि लगातार फसलों का पूरा उत्पादन लेने से आहारीय तत्वों की उपलब्धता बहुत घट जाती है। (जिसका मुख्य प्रभाव औषधीय फसलों पर अधिक पडता है) जिसका पता मिट्टी की जांच से लगाया जा सकता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

१. प्रति हेक्टेयर अफीम की उत्पादन एवं वास्तविक उत्पादन का ऑकलन करना।
२. अफीम विपणन की स्थिति का अध्ययन करना ।
३. प्रति हैक्टेयर अफीम उत्पादन की लागत एवं लाभ का ऑकलन करना।
४. अफीम उत्पादन सरकार की आवष्यकता का ऑकलन करना।

4- शोध प्रविधि –

भारत अफीम उत्पादन में विश्व में सातवां स्थान रखता है। भारत में अफीम मुख्य रूप से मध्यप्रदेश एवं राजस्थान में उगायी जाती है। हमने अफीम उत्पादन की वास्तविक उत्पादन,विपणन स्थिति एवं लागत, लाभ के आंकलन के लिए म.प्र. के मंदसौर जिले को चयन किया, जहां हमने मंदसौर तहसील के एक गाँव का चयन किया जिसमें ५० अफीम कृषकों का संविधानुसार चयन किया। इन कृषकों के आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यांकन संबंधित आंकडों का संकलन साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से किया गया है। भारत एक कृषि प्रधान एवं गाँव प्रधान देश है, गाँवों में रहने वाली जनसंख्या के आय का मुख्य साधन कृषि है। जहाँ औषधि फसलों में अफीम को अग्र स्थान प्राप्त है, जिससे संबंधित जानकारी को अग्र तालिकाओं के माध्यम से विश्लेषित किया गया है।

5. अफीम उत्पादनं की स्थिति –

तालिका कमांक – 1 अफीम उत्पादकों कृषकों का आयु के आधार पर वर्गीकरण

आयु वर्ग	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
25 वर्ष से कम	10	20.0
25 – 35	7	14.0
35 – 45	19	38.0
45 वर्ष से अधिक	14	28.0
योग	**50**	**100.0**

स्रोत - सर्वेक्षित समंको के आधार पर

तालिका से स्पष्ट होता है कि हमारे सर्वेक्षण में २५ वर्ष की आयु के अफीम उत्पादकों की संख्या १० है, जिसका प्रतिशत २० है, २५-३५ वर्ष की उम्र में अफीम उत्पादकों की संख्या ७ है जिसका प्रतिशत १४ है एवं ३५-४५ वर्ष की उम्र के अफीम उत्पादकों की संख्या १६ है जिसका प्रतिशत ३८ है तथा ४५ वर्ष अधिक उम्र के अफीम उत्पादकों की संख्या १४ है जिसका प्रतिशत २८ है।अतः विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकतर अफीम उत्पादकों की संख्या ३५ वर्ष से अधिक है जिसका प्रतिशत ६६ है। इससे हमें ज्ञात होता है कि अनुभवी कृषक ही अफीम की खेती करता है या उसमें दक्षता रखता है।

तालिका कमांक – 2 अफीम उत्पादकों कृषकों का शैक्षणिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

शैक्षणिक स्थिति	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	17	34.0
साक्षर	19	38.0
प्राथमिक	9	18.0
माध्यमिक / हाईस्कूल	5	10.0
योग	**50**	**100.0**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अशिक्षित अफीम उत्पादकों की संख्या १७ है साक्षर उत्पादकों की संख्या १६ एवं प्राथमिक उत्पादकों की संख्या ६ तथा माध्यमिक व हाईस्कूल उत्पादकों की संख्या ५ है। अतः तालिका के विश्लेषण से हमें यह प्राप्त होता है कि अधिकतर अफीम उत्पादक अशिक्षित एवं साक्षर है जिसका प्रतिशत ७२ है। इससे यह ज्ञात होता कि मध्यप्रदेश में गाँवों में भी शिक्षा का स्तर निम्न है।

तालिका कमांक – 3 अफीम उत्पादकों कृषकों के पारिवारिक स्वरूप का स्वरुप

शैक्षणिक स्थिति	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
संयुक्त	36	72.0
एकाकी	14	28.0
योग	**50**	**100.0**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका से हमें ज्ञात होता है कि अफीम उत्पादकों का पारिवारिक स्वरूप संयुक्त परिवार के रूप में 72 प्रतिशत है तथा एकाकी परिवार के रूप में केवल 28 प्रतिशत है अतः इससे स्पष्ट होता है कि आज भी गाँवों में संयुक्त परिवारों की संख्या अधिक है।

तालिका कमांक – 4 कृषकों का कुल कृषी भूमि पर स्वामित्व (एकड़ में)

भूमि का क्षेत्रफल	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
5 एकड़ से कम	15	30
5 – 7.5	13	26
7.5 – 10	14	28
10 एकड़ से अधिक	8	16
योग	**50**	**100.0**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ५ एकड़ से कम कृषकों की संख्या १५ है ५ से ७.५ एकड़ कृषकों की संख्या १३ है एवं ७.५ से १० एकड़ कृषकों की संख्या १४ है १० एकड़ से अधिक कृषकों की संख्या ८ है । अतः तालिका के विष्लेषण से हमें ज्ञात होता है कि वर्तमान में भी गाँवो में सीमान्त या लघु कृषकों की संख्या अधिक है जो तालिका से ८४ प्रतिशततक है।

तालिका कमा क – 5 अफीम उत्पादकों कृषकों के अफीम के रकबे की स्थिति –

अफीम का रकबा	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
10 आरी	22	44.0
10–15 आरी	18	36.0
15–20 आरी	8	16.0
20 से अधिक	2	4.0
योग	**50**	**100.0**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका में सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि १० आरी अफीम के रकबे को २२ अफीम उत्पादक होते हैं जिसका प्रतिशत ४४.० है। १०–१५ आरी के रकबे को १८ उत्पादक एवं १५–२० आरी के रकबे को ८ उत्पादक तथा २० से अधिक आरी के रकबे को २ उत्पादक बोते हैं। अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि अफीम के १०–२० आरी के रकबे को ६६प्रतिशत उत्पादक बोते हैं जिसका प्रमुख कारण अफीम की खेती में अधिक लागत का पाया जाना है।

तालिका कमांक – 6 अफीम उत्पादकों कृषकों के पास उपलब्ध सिंचाई साधनों की स्थिति

सिंचाई के स्त्रोत	उत्तरदाता की संख्या	प्रति□ात
कुआँ	35	70.0
ट्यूबवेल	15	30.0
न्दी	0	0
न्हर	0	0
योग	50	100

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि अफीम उत्पादकों के सिंचाई के स्त्रोत में कुओं की संख्या ३५ है तथा प्रतिशत ७० है एवं ट्यूबवेल की संख्या १५ है। अतः तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है गाँव के आसपास नदी नहीं है और सरकार की ओर से नहर की कोई सुविधा नहीं है जिसका तात्पर्य यह है अफीम उत्पादकों के सिंचाई के स्त्रोत निजी है जो अफीम उत्पादन की लागत को बढ़ा देते है।

उपरोक्त तालिका में सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि १० आरी अफीम के रकबे को २२ अफीम उत्पादक होते हैं, जिसका प्रतिशत ४४.० है, १०–१५ आरीके रकबे को १८ उत्पादक एवं १५–२० आरी के रकबे को ८ उत्पादक तथा २० से अधिक आरी के रकबे को २ उत्पादक बोते हैं अतः विषलेशण से स्पष्ट है कि अफीम के १०–२० आरीके रकबे को ९६ प्रतिशत उत्पादकबोते है जिसका प्रमुख कारण अफीम की खेती में अधिक लागत का पाया जाना है।

तालिका कमांक – 7 अफीम उत्पादकों कृषकों के पास उपलब्ध सिंचाई के यंत्रों की स्थिति

सिंचाई के स्त्रोत	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
मोट द्वारा	0	0
डिजल इंजन	0	0
विद्युत पंप	50	100
योग	**50**	**100**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अफीम उत्पादक सिंचाई के यंत्र में केवल विद्युत पंप का उपयोग करते हैं जो सिंचाई के स्त्रोत से संबंधित है अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि गाँवों में बिजली की पर्याप्त व्यवस्था है।

अफीम उत्पादकों द्वारा अपनाई जाने वाली सिंचाई की विधि की स्थिति –: उपरोक्त तालिका या विष्लेशण से यह ज्ञात होता कि अफीम उत्पादक क्यारी विधि, फव्वारा विधि एवं ड्रिप विधि सभी विधियों का सिंचाई के लिए प्रयोग करता है। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान में कृषक परंपरागत सिंचाई विधि एवं आधुनिक सिंचाई विधि का मिला–जुला उपयोग करता है।

तालिका कमांक – 8 अफीम की खेती में सिंचाई के लिए पानी की आवष्यकता की स्थिति

पानी की आव□ियकता	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
10 बार	18	36
11 बार	16	32
12 बार	16	32
योग	50	100

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

अफीम की खेती की अवधि लगभग १५० दिन (पाँच महीने) की होती है इसके कारण अफीम की खेती में पानी का आवष्यकता अधिक होती है तालिका से स्पष्ट है कि १० बार पानी की आवष्यकता वाले अफीम उत्पादकों की संख्या १८ एवं ११ बार वालों की संख्या १६ तथा १२ बार वाले अफीम उत्पादकों की संख्या १६ है अतः इस विष्लेशण से यह स्पष्ट है कि अफीम की खेती में पानी की आवश्यकता महत्वपूर्ण स्त्रोत माना जाता है अफीम उत्पादन के लिए जो अफीम उत्पादन की लागत को बढ़ा देता है।

अफीम उत्पादन के लिए खाद की आवश्यकता का विश्लेषण –:

अफीम उत्पादक अफीम उत्पादन के लिए तीनों प्रकार के खाद का उपयोग करते हैं। अतः इससे यह स्पष्ट होता है

वर्तमान में गाँवों के कृषक जागरूक है।

अफीम की खेती में आने वाले रोगों का विश्लेषण –:

अफीम की खेती में मुख्य रूप से दो रोग आते हैं डाउनी मिल्डी और पावडरी मिल्डी जिसके लिए किसान रासायनिक दवाईयों का छिड़काव करते हैं, जिनमें प्रमुख ड़ड और क४० % दवाई का उपयोग करते हैं। अतः विष्लेशण से स्पष्ट है कि किसान निरंतर रासायनिक दवाईयों का उपयोग करके पर्यावरण एवं स्वयं को क्षति पहुंचा रहा है।

तालिका कमांक – 9 अफीम उत्पादकों के अफीम उत्पादन की लागत विश्लेषण

लागत हजार में	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
30 हजार	16	32
30–35 हजार	15	30
35 से 45 हजार	13	26
45 से अधिक	6	12
योग	**50**	**100**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

तालिका के विश्लेषण से यह अफीम की लागत का औसत ३० हजार से ४५ हजार है, जो ८८ः है। अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि अफीम की लागत इसकी फसल की तुलना में कई गुना अधिक है।

अफीम की खेती में निम्न उत्पादनों के विश्लेषण –:

अफीम की खेती में तीन प्रकार के – अफीम रस, खसखस एवं डोडाचूरा का उत्पादन होता है। अतः इससे स्पष्ट है कि अफीम की खेती बहु उत्पादन खेती है अन्य फसलों के बजाय इसमें अधिक प्रकार के उत्पादन होते हैं।

अफीम उत्पादन की विपणन व्यवस्था का विश्लेषण –:

अफीम उत्पादन की विपणन व्यवस्था पूर्ण रूप से सरकारी है अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि अफीम की खेती पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण होता है।

तालिका कमांक – 10 अफीम उत्पादन की सरकार को दी जाने वाली मात्रा का विश्लेषण –

मात्रा	उत्तरदाता की संख्या	प्रतिशत
5.80	22	44
6.96	2	4
7.54	2	4
8.50	2	4
8.70	12	24
9.86	4	8
11.60	4	8
14.40	2	4
योग	50	100

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से पहले हम स्पष्ट कर दें कि अफीम उत्पादन की मात्रा सरकार द्वारा पहले से ही निश्चित होती है जो अफीम के रकबे पर निर्भरत करती है। तालिका से स्पष्ट है कि ५ण्८० ज्ञह ; १० आरी पर द्ध मात्रा देने वाले उत्पादकों की संख्या सबसे अधिक २२ है जो ४४ प्रतिशत है एवं ८ण्७० ज्ञहण ; १५ आरी पर) मात्रा द्वितीय स्थान पर है जहां उत्पादकों कि संख्या १२ है। अतः विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अफीम उत्पादन को अफीम की मात्रा अपने बोए गये रकबे के अनुसार अनिवार्य रूप से सरकार को देनी पडती है।

अफीम की गुणवत्ता की जांच का विष्लेषण –:

यह एक खुली निर्तीं होती है जिसमें किसानों के अफीम की मात्रा का ३६ ग्राम अफीम रस का सेंपल लिया जाता है जिसें ओवन पर गर्म करके उसकी गाढ़ता को देखा जाता है।दूसरा तरीका सरकार अफीम उत्पादकों के अफीम रस का सेंपल लेकर एक लेब में उसकी गाढ़ता को देखती है, जिसकी न्यूनतक सीमा ५५ प्रतिशत रखी जाती है, इससे कम प्रतिशत गाढता पाने पर अफीम उत्पादक का लाइसेंस निरस्त कर देती है।

अफीम उत्पादन की कीमत का विश्लेषण –

अफीम रस की कीमत केन्द्र सरकार तय करती है जो ६०० से २१०० रूपये प्रति किलो रखी जाती है, जो अफीम उत्पादक को अफीम रस की गाढ़ता के अनुसार दि जाता है।

डोडाचुरा की कीमत राज्य सरकार तय करती है, जो म.प्र. में १०० रूपये प्रतिकिलो एवं राजस्थान में १२५ रूपये प्रतिकिलो रखी गयी है। खसखस की कीमत बाजार भाव पर आधारित होती है।

तालिका कमांक – 11 अफीम के रकबे पर आयु की संरचना के प्रभाव का विष्लेषण

आयु	अफीम का रकबा				योग
	10 आरी	10–15 आरी	15–20 आरी	20 से अधिक	
25 से कम	2	7	0	1	10
25–35	4	2	1	0	7
35–45	9	5	5	0	19
45से अधिक	7	4	2	1	14
योग	22	18	8	2	**50**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि २५ से कम उम्र अफीम उत्पादकों कि संख्या १० , २५-३५ अफीम उत्पादकों की संख्या ७ एवं ३५-४५ वर्ष उम्र वाले अफीम उत्पादकों की संख्या १६ तथा ४५ वर्ष से अधिक अफीम उत्पादकों की संख्या १४ है। इससे स्पष्ट होता है कि अधिक उम्र वाले व्यक्ति अफीम की खेती करते है जिसका प्रतिशत ६६ प्रतिशत है। अतः इससे यह ज्ञात होता है अनुभवी व्यक्ति या किसान ही अफीम की खेती में दक्षता रखता है। इससे यह सिद्ध होता है कि अनुभव शिक्षा एवं नौकरी के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि कृषि के क्षेत्र में भी बहुत आवश्यक है।

उपरोक्त तालिका के विष्लेशण के पश्चात् अफीम के रकबे एवं आयु की संरचना के मध्य स्वतंत्रता का परीक्षण करने के लिए ग२ . जमेज का उपयोग किया गया जिसके अंतर्गत हमारी परिकल्पना ;भ्व्द्ध इस प्रकार है – ''अफीम के रकबे और आयु की संरचना के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।''

तालिका कमांक – 12 काई वर्ग परीक्षण

आयु	अफीम का रकबा				योग
	10 आरी	10–15 आरी	15–20 आरी	20 से अधिक	
25 से कम	2	7	0	1	10
25–35	4	2	1	0	7
35–45	9	5	5	0	19
45से अधिक	7	4	2	1	14
योग	22	18	8	2	**50**

Answer : 12 cells (75.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is .28

5 प्रतिशत सार्थकता दर से यह स्पष्ट होता है कि हमारी शून्य परिकल्पना असत्य है अतः अफीम के रकबे और आयु संरचना के बीच संबंध है।

तालिका कमांक – 13 अफीम के रकबे पर शिक्षा के स्वरूप का प्रभाव एवं उसका विष्लेषण –

िाक्षा	अफीम का रकबा				योग
	10 आरी	10–15 आरी	15–20 आरी	20 से अधिक	
अशिक्षीत	8	7	1	1	17
साक्षर	9	6	3	1	19
प्राथमिक	4	3	2	0	9
माध्यमिक	1	2	2	0	5
योग	22	18	8	2	**50**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका के विष्लेशण से स्पष्ट है कि अषिक्षीत अफीम उत्पादकों की संख्या १७ एवं साक्षर उत्पादकों की संख्या १६ है जो कुल ७२ प्रतिशत है एवं प्राथमिक, माध्यमिक, हाईस्कूल उत्पादकों की संख्या १४ है, जो २८ प्रतिशत है। अतः इससे यह स्पष्ट है कि अफीम उत्पादन करने वाले कृषकों की संख्या में अशिक्षीत एवं साक्षर उत्पादकों की संख्या अधिक है।
उपरोक्त तालिका के विश्लेषण के पश्चात् अफीम के रकबे और उत्पादकों की शिक्षा के मध्य स्वतंत्रता का परीक्षण करने के लिए ग२ . जमेज का उपयोग किया गया जिसके अंतर्गत हमारी परिकल्पना ;भ्द्ध इस प्रकार है – ''अफीम के रकबे और शिक्षा के स्वरूप के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।''

तालिका कमांक – 14 काई वर्ग परीक्षण

Test	Value	df	Asyme Sig (2 sided)
Pearson Chi-square	4.902	9	.843
Likelihood ratio	5.393	9	.793
Linear-by-Linear Association	.864	9	.353
No. of Valid Cases	50		

12 celles (75.0%) have expected less than 5. The minimum expected count is .20

अतः 5 प्रतिशत सार्थकता दर से स्पष्ट होता है कि हमारी परिकल्पना असत्य है। अतः ''अफीम के रकबे और शिक्षा के स्वरूप के मध्य सार्थक सहसंबंध है।''

तालिका कमांक – 15 अफीम उत्पादन की लागत पर परिवार के स्वरूप का प्रभाव एवं विश्लेषण –

परिवार का स्वरूप	लागत हजार में				योग
	30 हजार	30–35	35–45	45 से अधिक	
संयुक्त	16	13	7	0	36
एकांकी	0	2	6	6	14
योग	16	15	13	6	**50**

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार की अफीम उत्पादन लागत ३० हजार में १६ है परिवार ३०–३५हजार में १३ परिवार है , ३५–४५ हजार में ७ परिवार है एवं ४५हजार से अधिक में एक भी परिवार नहीं है। कुल संयुक्त परिवार ३६ है जिनका प्रतिषत ७२ प्रतिशत है। एकांकी परिवार की अफीम उत्पादन लागत ३०–३५ हजार में २ परिवार ३५–४५ में ६ परिवार है तथा ४५ से अधिक में ६ परिवार है। अतः स्पष्ट है कि संयुक्त परिवारों में अफीम उत्पादन की लागत एकांकी परिवार की तुलना में अधिक है। इससे ज्ञात होता है कि अफीम उत्पादकों को एकांकी परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार से अधिक लाभ है।

उपरोक्त तालिका के विष्लेशण के पश्चात् अफीम उत्पादन की लागत एवं पारिवारिक स्वरूप के मध्य स्वतंत्रता का परिक्षण करने के लिए ग२ . जमेज का प्रयोग किया गया जिसमें हमारी परिकल्पना भ्द निम्नलिखित है – ''अफीम उत्पादन की लागत एवं

पारिवारिक स्वरूप के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।''

तालिका कमांक – 16 काई वर्ग परीक्षण

Test	Value	df	Asyme Sig (2 sided)
Pearson Chi-square	26.376	3	.000
Likelihood ratio	29.570	3	.000
Linear-by-Linear Association	22.672	1	.000
No. of Valid Cases	50		

5 cells (62.5%) have expected count less then 5 The minimum expected count is 1.68.

५ प्रतिशत सार्थकता दर से स्पष्ट है कि हमारी परिकल्पना असत्य है इसका तात्पर्य यह है कि अफीम उत्पादन की लागत एवं पारिवारिक स्वरूप के मध्य सार्थक संबंध है।

कुल भूमि का रकबा एवं अफीम के रकबे की स्थित –:

कुल भूमि के रकबे के जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए हैं जिन्हें नीचे तालिका में दर्शाया गया है –

तालिका कमांक – 17 – भूमि का रकबा एवं अफिम के रकबे की स्थिति

भूमि रकबा	अफीम का रकबा				योग
	10 आरी	10–15 आरी	15–20 आरी	20 से अधिक	
5 एकड से कम	4	7	4	0	15
7.5–10 एकड	4	7	0	2	13
7.5–10 एकड	8	4	2	0	14
10 से अधिक	6	0	2	0	8
योग	22	18	8	2	50

स्रोत – सर्वेक्षित समंको के आधार पर

तालिका से स्पष्ट है कि ०–१० एकड वाले कृषकों कि संख्या अधिक है जो अफीम के १० से २० आरी तक रकबे का ८४ प्रतिशत बोते हैं जिससे स्पष्ट है कम भूमि के क्षेत्रफल वाले कृषक अफीम की खेती करते हैं जिसका प्रमुख कारण अफीम की खेती करने मे कुशल, अनुभवी होना आवष्यक है जिसके साथ अफीम की खेती को अधिक समय एवं अधिक रखरखाव करना पडता है।

उपरोक्त तालिका के विश्लेशण के पश्चात् कुल भूमि का क्षेत्रफल एवं अफीम के क्षेत्रफल के मध्य स्वतंत्रता का परिक्षण करने के लिए x2 - test का उपयोग किया गया। जिसके अंतर्गत शून्य परिकल्पना निम्नलिखित है – ''भूमि के कुल क्षेत्रफल और अफीम के रकबे के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।''

तालिका कमांक – 18 काई वर्ग परीक्षण

Test	Value	df	Asyme Sig (2 sided)
Pearson Chi-square	17.827	9	.037
Likelihood ratio	21.941	9	.009
Linear-by-Linear	2.915	1	.088
No. of Valid Cases	50		

cells (68.8%) have expected count less then 5 The minimum expected count is.32

तथा ५ प्रतिशत सार्थकता से यह स्पष्ट होता है कि हमारी परिकल्पना असत्य है अतः कुल भूमि के रकबे एवं अफीम के रकबे के मध्य सार्थक संबंध है।

अफीम उत्पादकों को अफीम की खेती से लाभ –

अफीम उत्पादकों को अफीम की खेती से मुख्यतौर पर आर्थिक लाभ है क्योंकि कम भूमि पर अफीम की खेती तीन प्रकार के उत्पादन देती है, जिससे किसानों को दूसरी फसल की तुलना में अधिक लाभ है।

अफीम की खेती से समाज में फैलती कुरीतियां –

अफीम की खेती जिस गांव में की जाती है वहां नशे करने वाले व्यक्ति भी पाए जाते हैं। अफीम की खेती पूर्ण रूप से नशे से संबंधित है। इसका रस, हरी पत्तियां, डोडाचूरा सभी मादक पदार्थ कहलाते हैं। जो पूरे देश में ही नहीं अनेक देशों में इन मादक पदार्थों का दुरूपयोग किया जाता है।

अफीम की खेती सरकार की आवष्यकता –

सरकार अफीम की खेती या अफीम उत्पादन अफीम रस की आवष्यकता के लिए करवाती है क्योकि अफीम रस में १२ प्रतिशत मार्फिन पाया जाता है जो घाव पर लगाने पर तुरंत ठीक करता है इसलिए सरकार को आर्मी की आवश्यकता एवं आपातकाली युद्ध के समय इसकी आवश्यकता पडती है एवं सरकार को अफीम निर्यात में भी बहुत लाभ प्राप्त होता है।

निष्कर्ष –

अफीम उत्पादकों के आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं का विश्लेशण उपरोक्त शोध में किया गया है जिसमें अफीम उत्पादकों की पारिवारिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, भूमि की स्थिति, अफीम की उत्पादन स्थिति, सिंचाई, यंत्र, उपज, कीमत लागत संबंधी तथ्यों का विष्लेशण किया गया है। इन विभिन्न तथ्यों के विश्लेशण से जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए है वो इस प्रकार हैं –

अफीम उत्पादकों के आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं के विश्लेशण से यह पता चलता है कि अफीम की खेती एक कुशल खेती है जिस प्रकार एक उद्यमी अपने उद्योग को चलाता है उसी प्रकार एक अफीम उत्पादक अफीम की खेती करता है जो पूर्ण रूप से सरकार की निगरानी में होती है विष्लेशण से यह तो स्पष्ट है कि जितनी लागत कृषकों की अफीम उत्पादन में लगती है उसमें कई अधिक लागत सरकार को वह अफीम प्राप्त करने में लगती है, अफीम की खेती पूर्ण रूप से सरकार की आवश्यकता पर आधारित है सरकार को जिस दिन अफीम रस का विकल्प केमिकल के रूप में मिल जाएगा तो सरकार अफीम उत्पादन पर पूर्ण रूप से बैन लगा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१.औषधीय एवं सगंध फसलों की वैज्ञानिक खेती एवं व्यवसाय – डॉ. जी.एन. पाण्डेय सह संचालन, अनुसंधान एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक
२.Indian Economy Journal
३.कुरूक्षेत्र पत्रिका (2015, 2001)

गौरव पाटीदार
[2]एम.फिल. (अर्थशास्त्र) अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, देअविवि, इंदौर (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org